2017-18

ISSN - 2394-2266

धर्माबाद शिक्षण संस्था, धर्माबाद द्वारा संचलित

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

धर्माबाद, जि. नांदेड (महा.)

(नॅक पुनर्मूल्यांकन 2.87 CGPA के साथ 'B' मानांकन)

तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के संयुक्त तत्त्वावधान में

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं
महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २५ वाँ (रजत महोत्सवी) अधिवेशन

सार्थक उपलब्धि

२१ वीं शताब्दी के हिंदी साहित्य में महानगरीय बोध

२२-२३ दिसंबर, २०१७

संपादक
डॉ. मधुकर खराटे

अतिथि संपादक
डॉ. प्रतिभा जी. येरेकार

21 वीं सदी के उपन्यास में महानगरीय बोध

डॉ. रेखा मुळे (कवाड)
कला विज्ञान महाविद्यालय चौसाळा ता. बीड

21 वी सदी के धार्मिक, राजनितीक, सामाजिक, आर्थिक, परीवारिक दहलीजपर विविध में एकता के कारण विश्म में सर्व कोष्ट देश माना जाता है। भारत में अनेक भाषा जाति सम्प्रदायों का वास्तव्य है फिर भी मानवी एकतो के प्रति कम दिखाई देता है। इक्कीसवी सदी में इस पहलू पर भी गौर करने की आवश्यकता है की, व्यक्ति एवं प्रकृती की, अंतरक्रिया में और कॉस्मिक परिकल्पना के तहत दर्शन और विज्ञान के ऐसे रवैये प्रचलित हो जो अंततः व्यक्ति सहाय्यक सिध्द हो। विज्ञान और प्रोधोगिक प्रकृति को विनष्ट करने और मनुष्य के रचनात्मक उर्जा शक्ति का उत्कर्ष करते प्रकृति के रंगारंग जीवन प्रथ सौंदर्य को अभिव्यक्त करते और सृष्टी के रहस्यों से परदा उठाने में जारि प्रयासों मे दोस्त दर्शनिक भमिका निभाते है। इक्कसवी सदी खोजो की निरंतरत अस्तित्व के टूटने की शंकाओं और अतीत कनकारने के लिए याद की जाएबी उसका भविष्य स्वयं एक विडम्बना जूस रही है। वह डर को जीतने का दावा करती है और फिर भी संशय को पालती जा रही है। वह बेहद जल्दी में है बिना यह किए उसे जाना कहाँ है? वही जा रही है। हिन्दी उपन्यास का अविर्भाव सामाजिक चेतना को लेकर हुआ है, हिन्दी उपन्यास में भारतीय लोकजीवन का जो चित्रण हुआ है वैसा साहित्य की अन्य विधाओं में दुर्लभ है।

उपन्यास हिन्दी साहित्य की वह विधा है, जो मानव चरित्र, समाज उनकी स्थिती और समस्याओं का जीवंत चित्रण करने तें सक्षम हुई है। हिन्दी उपन्यासों का प्रारंभ ही नई राष्ट्रयंत्ता के वातावरण में हुआ। उपन्यास साहित्य की दिलचस्पी प्रारंभ हुही। अपने सम सामाजिक, राजनिति तथा सांस्कृतिक आंदोलने में जितनी अधिक रही उतनी संभवत अन्य किसी भी साहित्यिक विधा की नही रही।

इस दृष्टी से उपन्यास का जन्म ही शासन की व्यवस्था का चित्रण तथा उसकी विसंगतियों पर व्यग्य प्रहार से हुआ है। उपन्यास साहित्य राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्त में किसी भी विधा से पीछे नहीं रहा है। उसके अंतर्गत देश प्रेम तथा जातिय गौरव की भरपूर अभिव्यक्ति हुई है। किसी भी श्रेष्ठ कलाकृति में युग की केवल उनही समस्याओं की प्रधानता दी जाती है। जो सारे युग की समग्र मानवता को सामुहिक गति से संबंधक रखते है जैसे युध्द और स्थायी शांति जन जीवन में पायी जानेवाली व्यापक आर्थिक विषमता बनाम सामुहिक समाज आदि। उपन्यास साहित्य में प्रमुख रूप से मानव मन की गुस्थियों को सुलझाने का प्रयास किया जा रहा है। इसलिए उपन्यास विधा अत्य विधाओं से अधिक लोक प्रिय हो रही है। इय सुग में उपन्यास बहुत अधिक मात्र में लिखे जा रहे है। उपन्यासों मे विविध विषय वस्तुओं को यदि एक स्थान पर एकत्रित किया जाए तो हमारे समूचे मानव जीवन का एक अत्यन्त जीवन्त विशाल चित्र उपस्थित हो जायेगा।

दौड यह उपन्यास इक्कीसवी सदी के उदारीकरण और बाजारवाद के जीवनगत परिणामों का यथार्थ संकलन है। इक्कसवी सदी में आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाजार को शक्तिशाली बनाया इसने व्यापार प्रबंधन की शिक्षा के व्दार खोल छात्र को व्यापार प्रबंधन में विशेषता हासिल करने के अवसर प्रदान किये। बहुराष्ट्रीय कंपनियो ने रोजगार के नए अवसर प्रदान किए। युवा वर्ग ने पूरी लगन के साथ इस जादूई नगरी के व्दार को खोला और इसमें प्रविष्ट होने का अवसर प्राप्त किया।

आज समाज ऐसे दोराहे पर खडा है जहाँ से एक रास्ता बहुराष्ट्रीय कंपनीयो की चरम उपभोक्तावादी संस्कृती के अंधे कुंएँ को जाता है। तो दुसरा संस्कार सुरक्षा और संमती सामुदायिकता की पुरानी और गहरी खाई की और दोनो एक दुसरे की कमजोरियों से ताकत पाते है। तीसरा रास्ता मिलता नही। बीसवी सदी के अंत मे भारतीय समाज के सबसे गहरे सांस्कृतिक संकट वह अख्यान है दौड जो बाजार के दबाव समुह उनके परोश अपरोश मारक तनाव आक्रमण और निर्मलता तथा अंधी दौड मे नष्ट होते मनुष्य के आसन खतरे में पडे मनुष्यत्व को उजागर करती है। यह रचना मनुष्य के पारंपारिक संबंधो की परंपरा और वर्तमान की मध्य विकराल होते अतराल की सुक्ष्म पडताळ कती है।

दौड उपन्यास मे यह बताया है की, समकुछ कमाया जा सकता है मजर स्नेह नही वह तो आत्मयता पर पलती है। धन की नशा मे नही यह नशा मनुष्य को अंधकार में केल देती है।स्नेह का दीप हर अंधकार में उजाला फैल सकता है। दौड लगाना गलत नही है मगर रफ्तार को कम करके खूद की तरफ देखो और स्नेह की पुकार खुन लो जीवन ज्योति जगमगा उठेंगी यही दौड उपन्यास की सार्थकता है।

निष्कर्षताः 7 हम कह सकते है कि, हिन्दी कथा साहित्य का अंतराष्ट्रीय स्वरूप वर्तमान साहित्य करो के साहित्य में विभिन्न समस्याओं विषयों भाषा के स्तर प्रकट होता हुआ दिखायी देता है। हिन्दी की जाने माने उपन्यास कार ममता कालिया का दौंड उपन्यास जिए कथात्मक समस्या और भाषा के माध्यम से प्रस्तुत होता है उसे अंतरराष्ट्रीय हिन्दी उपन्यास की श्रेणी में खडा करता है आर्थिक उदारिण भूमंडलीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए महा के व्दार खुल गये। रोजगार के कई अवसर निर्माण होने से शिक्षित युवकों की आवश्यकता पडी एम.बी. ए. व्दारा युवक धडाधड इस और मुडने लगे। पैसा,ग्लैमर चका चौंध के पीछे दौडते दौडते वह इतना स्वार्थी बन गया कि उसने पुराने मूल्यो को झुठा साबित कर अपने नये मूल्य बना लिए।

संदर्भ सूची :- 1) दौड उपन्यास से ई उपन्यास पृ. 4
2) उपन्यास और राजनीति, सुषमा शर्मा
3) उपन्यास साहित्य - रामदरश मिश्रा
4) 'दौड' ममता कालिया

●●●

ISSN : 2394-2266

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 04, Issue: 06, Nov. - Dec. 2017 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) - 4.935

नारी जाति के अधिकार :- हात भागे किसान

डॉ रेखा वसंतराव मुले

सहायक प्राध्यापक
कला और विज्ञान महाविद्यालय
चौसाला जिला बीड, महाराष्ट्र .

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद मर्धून्य कहानीकार उपन्यासकार माने जाते है। लगभग साडेतीनसों कहानियाँ और दस बारा उपन्यास लिखे है। किसान, स्त्री, जाती देश की सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक सभी परिस्थितीयों के उपर अध्ययन करके अपने उपन्यास और कहानी में यथार्थ चित्रण किया है।

नारी संबंधीत वर्णन करते हुये प्रेमचंद जी लिखते है की, येतो भारतीय नारी सदैव कुलदेवी समझी गई है। और उसे समाज में पुरुषों सें उँचा पद प्राप्त है। किंतु अन्यान्य कारणो सें जिनकी विवेचना करने का अवसर नहीं है। उसका स्थान गौण हो गया था। वह मंद बुध्दिमत्ता जिसने एक ओर पराधीनता की बेडी पाँव में डाली दुसरी और नारी जाती पर मनमाने अत्माचार करती गई।

उंच नीच का ऐसा संक्रामक रोग फैल। कि उसने समाज में ही छिन्न भिन्न कर दिया। बल्कि स्त्री पुरुष में ही छिन्न भिन्न कर दिया। पुरुषों ने नारी जाति के स्वत्वों का उपहरण करना शुरु किया, लेकिन राष्ट्रीयता और समृध्दि की जो लहर इस समय आई हुई है, वह इन तमाम भेंदो को मिटा देगी और एक बार फिर हमारी माताएँ उसी उँचे पद पर आरुढ होंगी जो उनका हक है।

भारत अपनी माताओं का सदैव भक्त रहा मातृ-पूजा उसके धर्म का एक मुख्य अंग है। क्या आज अपनी माताओं व्दारा विजयी होकर वह नाी जातिसे स्वत्व को स्विकार न करेगा ? भारत के पतन काल में जब पुरुषों को- अपने ही उपर विश्वास नहीं था। वह स्त्रियों पर क्या विश्वास करते पर इस एक वर्ष के सत्याग्रह संग्रामने सिध्द कर दिया कि भारत की देवियाँ अब भी धर्म् और कर्तव्य की वेदी पर अपने को होमकर सकती है। यदी पुरुषों को अब भी उनपर शासन करने का उन्माद हो तो उसे शीघ्र से शीघ्र दूर कर देना याहिए क्यों कि वह चाहे देया न दें देवियाँ अपने स्वत्वों को लेकर ही रहैगी ।

उन्हे हरएक विषय में पुरुषो के समान अधिकार होना चाहिए और इसका निर्णय देवियों पर छोड देना चाहिए कि वे अपने हितार्थ जो स्वत्व चाहे ले ले । हमारे विचार में आज में निम्नलिखीत विषयोंपर नारियों को अंसंतोष है और इस असंतोष को देवियों कीं इच्छानुसार ही शमन करना पडेगा।

एक विवाह का नियम स्त्री पुरुष दोनों ही के लिए समान रुप है। कोई पुरुष पत्नी के जीवन काल में दूसरा विवाह न कर सके। पुरुष की संपत्ती पर पत्नी का पूरा अधिकार हो। वह उसे रेहन क्यू जो चाहे कर सके। पिता की संपत्ती पर पुत्रों और पुत्रियाँ का समान अधिकार है। तलाक का कानून जारी किया जाए और

वह स्त्री पुरुष दोनो ही के लिए समान है। तलाक के समय स्त्री पुरुष की अधि संपत्ती पाए और यदि मौरुसी जायदाद ही तो उसका एक अंश।

भारत के अस्सी फीसदी जनता या पुरुष आज भी खेती करते है। कई फीसदी ० वह है जो अपनी जिविका के लिए किसानों के मुहताज है। जैसे गाँव में बढई लुहार आदि। राष्ट्र के हाथ में जो कुछ विभूति है वह इन्ही किसानों और मजदुरों की मेहनत का सदका है। हमारे स्कूल और विद्यालय हमारी पुलिस और फौजी हमारी अदालते और कचहरियॉ सब उन्ही की कमाई के बल पर चलती है। लेकिन वही जो राष्ट्र के अन्न और वस्त्र दाता है भरपेट अन्न को तरसते है। जाडे पाले में ठिठूरते है। और मक्तिरवसों की तरह मरते है।

एक जमाना था जब गाँव के लोग अपने डील-डौल बल पौरुष के लिए मशहूर थे। जब गाँवो में दूध घी कि इफारात थी। जब के लोग दीर्घजीवी होते थे। जब देहात की जलवायु स्वास्थकर और पौषक थी लेकिन आज आप किसी गाँव में निकल जाइए। आपको खोजने से भी हस्टपुष्ट आदमी नही मिलेगा। न किसी की देहपर मास है न कपडा। मानों चलते फिरते कंकाल हो। और तो और उन्हे रहने को स्थान नही है।

लेकिन आज भारत दरिद्रता और अज्ञान कें ऐसे गहरे गडुमे गिर पडा है कि उसकी थाह भी नही मिलती है।लॉर्ड कर्जन ने १९०१ तीस रुपए साल किया था। १९०५ में एक दूसरे हिसाबादँ ने इस अनुमान को पचास रुपय तक पहुँचाया और १९१५ में वह समय था जब यूरोपीय महाभारत ने चीजों का मूल्य बहुत बढा दिया आज भी भारत में किसानों की दशा की और ध्यान नहीं दिया और उनकी दशा आज भी वैसी है जो पहले थी। उनके खेती के औजार, साधन, कृषि-विधि कर्ज दरिद्रता सकबुछ पूर्ववत है।

किसानों के लिए दूसरी जरुरत ऐसे घरेलू धंद्यो की है। जिससे वह अपनी फूरसत के वक्त कुछ कमा सके। यह काम असंगठित रुप से सफल नाही हो सका। इसे या तो सहकारी सोसायटियों के हाथ में दिया जाना चाहिए। या सरकार को खुद अपने हाथ मे रखकर व्यापार और उद्योग विभाग के व्दारा इसका संचालन कराना चाहिए।

एक प्रांत में बाज ऐसी चीजे है। जीनकी खपत नही है। मगर दूसरे प्रांतो में उनकी अच्छी खपत है । ऐसे उद्योगो का प्रचार किया जाना चाहिए।

खेती की पैदापार बढाने की और भी अभी तक काफी ध्यान नहीं दिया गया। सरकारने अभी तक केवल प्रदर्शन और प्रचार की सीमा के अंदर रहना ही उपयुक्त समझा है। अच्छे औजार अच्छे बीजो, अच्छी खादों का केवल दिखा देना ही काली नही है। सौ में दो किसान इस प्रदर्शन से फायदा उठा सकते है।

आज भारत में किसानों के पास इन भैतिक बाधाओं की कोई दवा नही है। कृषि विभाग ने इस विषय में बहुत कुछ खोज किया है। और जरुरत है कि उसकी परिक्षित अनुभूतियाँ किसानों के कानों तक पहुँचाई जाएँ। केवल इतना ही नही उनके व्दार तक पहुँचाई जाएँ। पर यहाँ तो जो कुछ होता है। दफ्तरी ढँग से जो इतना पेचीदा और विलंबकारी है कि उससे किसानों को फायदा नही होता यहाँ दफ्तरी ठंग की नही मशीनरी उद्योग की जरुरत है।

आज तक सरकाने किसनो के साथ सौतं ले लडके का सा व्यवहार किया है। अब उसे किसानों का अपना जेठा पुत्र समझ कर उसके अनुसार अपनी नीति का निर्माण करना होगा।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार इतना आवश्यक चाहते है कि सरकार और जमिंदार दोनो ही इस बात को न भूल जाएँ कि किसान भी मनुष्य है उसे भी रोटी और कपडा चाहिए रहने को घर चाहिए उसके घर में शादी गमी के अवसर आते है। उसे भी अपनी बिरादारी में अपने कुल मर्यादा की रक्षा करनी पडती है। बीमारी आरामी औरो की तरह उस पर भी व्याप्त होती है। इसी लिए लगान बांधते समय इस बात का ख्याल रखे कि किसान को कमसे कम खेती में इतनी मजदूरी तो मिल जाए कि वह अपने बाल बच्चों का पालन कर सके। इसी लिए जमीन कें लगान के दर में नार सिरे से तरमीम होती आवश्यक है। बेशक उससे जमींदारों की आमदानी कम हो जाएगी और सरकार को अपने नए बजट बनाने मे बडी कठिनाई पडेगी लेकिन किसान के जीवन का अन्य सभी हिंतो से की ज्यादा मुल्य है। आज परिस्थिती में कुछ ऐसा परिवर्तन करने की जरुरत है कि किसान सुखी और स्वस्थ है । आज सरकार किसानों के हित के लिए कुछन कुछ बदल कर के उनके वृध्दी में आय बढाने का काम कर रही है।

संदर्भ सूचि :-

१. हंसपत्रिका नई दिल्ली
२. अनभैय त्रैयसिका डॉ रतन पान्डे , मुंबई
३. संचारीका विश्व विद्यालय, औरंगाबाद
४. भारतीय साहित्य मिलिंद प्रकाशन सुलतान बाजार हैद्राबाद

ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 Issue 11 February 2018

समकालीन कविता: एक अध्ययन

SPECIAL ISSUE NO..2

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे
सह संपादक
डॉ. रामचंद्र ज्ञानोबा केदार

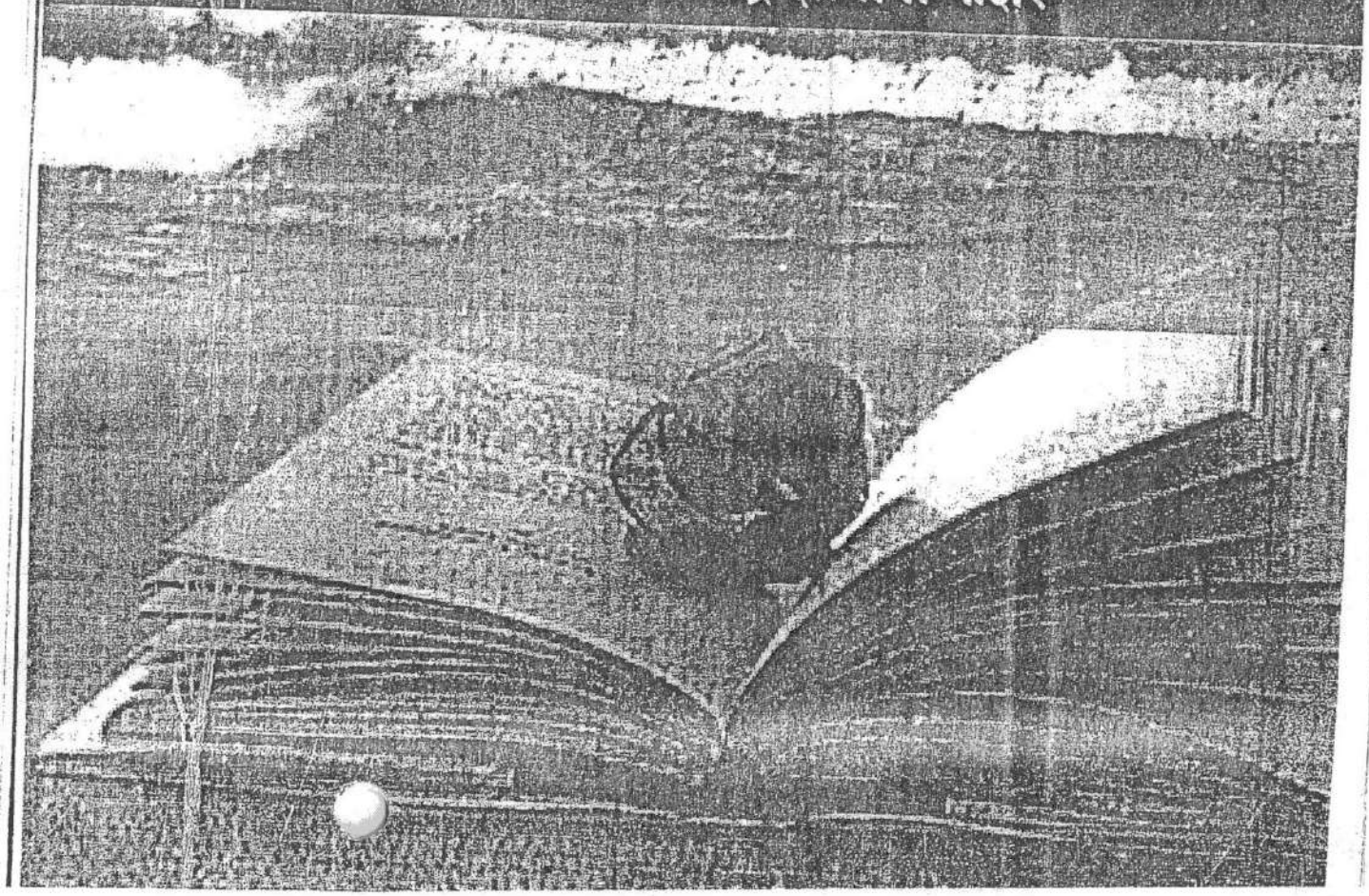

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 102-106
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

सम कालीन हिंदी कविता

प्रा. डॉ. रेखा मुळे (कैवाडे)

समाज साहित्य से अभिन्न होता है । और समाज में होने वाले परिवर्तन की अनुगूंड उम्र में सुनी जा सकती है। इस क्रम में हिन्दी साहित्य भी इस नए आर्थिक बदलाव पूंजी के एकीकृत रूप उदारवादी खुली अर्थव्यवस्था बाजारवाद उपभोक्तावादी मनोवृत्ती से प्रभावित हुआ है ।

समकालीन हिंन्दी कवीताने भारतीय जन जीवन को अत्यंत सकारात्मक रुपमे इसकी कमींयो को उद्घाटीत करते हुए अपने में उभारा है। यह जीवन में भाग लेती हुई उसकी समस्याओं से लडती जुझती आम आदमी की कविता है। जो विपरीत परिस्थितीयो मे भी मानवीय मूल्यों की सुरक्षा चाहती है। उसमें निराशा की जगह संषर्घ और पराजय के स्थान पर विद्रोह का भाव दिखलाई देता है। समकालीन कवि समाज के बिखरते जीवन मूल्यों तथा जासद कारकोंपर अपनी लेखनी चलाकर परिवर्तन कामी शक्तियों के साथ मिलकर संघर्ष मे अपनी सक्रिय हिस्सेदारी चाहते है। समकालीन कविता जीवन का सही मर्म तलाशना चाहती है।

हिन्दी कविता समकालीन कवि में इसके प्रभावों को चिहिन्नत किया जाने लगा है। वैश्वीकरण के वर्तमान परिवेश मे आवारा हदयहीन दरबारी पुंजीवाद का जो जलवा है उससे भौतिक ऐश्वर्य का विस्तार हुआ है। वही उसने मनुष्य को सृजन से

प्रा. डॉ. रेखा मुळे (कैवाडे) : कला विज्ञान महाविद्यालय, चौसाला, ता. जि. बीड

काटकर रख दिया है। ज्ञान के अन्य अनुशासनों की तरह कविता भी जीवन को समझने कार एक अंतर्गत सूत्रा हो रहा है।

कविता हमारे अंतर्जेगत को आलोकित करती है। वह हमारी भाषा की स्मृती है। कवि एक साथ कई घरातलोपर जीती है। वर्तमान से समकालीन हिन्दी कविता आम आदमी के विरूध्द भूमण्डलीकरण उदारवाद खूली अर्थव्यवस्था बाजारवाद वस्तुवाद विज्ञापनवाद अमेरिका के अगुवाई में पनपने वाले नव साम्राज्यवाद उत्तर आधुनिकता का मुखोटा पहनकर बढ रही है।

समकालीन हिन्दी कविता का इतिहास फलक इसलिए अस्ती विस्तृत है कि कविता संबंधी नये प्रतिमान के आधारपर कविता कर्म की सार्थक यात्रा के असंख्य पदचिन्ह हमे प्राप्त होते है। समकालीन कविता मानव भविष्य के पक्ष धरता का दुसरा नाम है यह विचार कविता मात्र का नही वरन्न नार विश्व का विचार है।

मुक्तिबोध लिखते है की, कविता मे कहने की आदम नही पर कह दु वर्तमान समाज चल नही सकता

समकालीन कविता अपने समय के मुख्य अन्तविरोध और दुव्दो की कविता है। समकालीन हिन्दी कविता के नवीनतम आयाम ने पुरे आधुनिक साहित्य को एक नयी रोशनी दी। कवि एक बार फिर अपने कवि कर्म की और ईमानदारी से अग्रसर हुआ।

कविता मुलत : युग संदर्भो की देन आती है। उसमे आतीत के चित्रण और भविष्य के संकेत भी युग संदर्भ से जुडकर ही आते है। इसलिए यह कहना उचित होगा की प्रत्येक रचना समकालीन होती है। युग संदर्भा के साथ काव्य प्रवृत्तीयो मे निरंतर परिवर्तन होता चला आया इसलिए अपनी व्यपकता में प्रत्येक रचना समकालीन है। वास्तव मे समाकालीनता का सीधा अशय है अपने समय के प्रती व्यक्ति तभी ईमानदार होता है। जब संकटो की परवाह किये बिना समय के क्रूर अभेद संबंध स्थापित कर लेता है। और निर्मम यथार्थ की ज्वाला में जलता हुआ अदभुत साध्य के साथ समय को चूनौती भी देता है। जैसा कबीर कहते है। कबिरा खडा बाजार मे लिये लुकाठी हाथ जो घर सारे अपना चले हमारे साथ।

समकालीनता के संदर्भ मे कबीर की यह परिभाषा एक सर्वकालीन और शाश्वत सत्य है। आज की समकालीन कविता एक साहित्यिक मुहवरा है, जो उस नयी संवेदना की खोडा है। जिसकी व्यक्ति आम आदमी तक है.. यह संवेदना सर्वकालिक

भी है और संवेदना सार्वकालिक भी है और समकालीन थी।

समकालीन कविता ने मनुष्य और प्रकृती के बीच रागात्मक सम्प्रक्ति उत्पन्न करके तथा अधिक आधुनिक संदर्भा से प्रकृती को जोडकर संबंध स्थापित किया है। एक जगह पर रघूवीर सहाय कहते है।

देखो वृक्ष को देखा वह कुछ कर रहा है।

किताबी होगा कबि जो कहैगा कि हाय पता झर रहा है।

इस प्रकार समकालीन कविता मे पकृती के प्रती रागात्मकतो अनुभूती की सजगता और जुडाव की भावना है। समकालीन कविता आधुनिक जीवन मूल्यो के साथ ही सभी परिपार्श्वो का संस्पर्श करती है। समकालीन कवि का विश्वास है कि कविता मनुष्य के संवेदना जगा सकती है। समकालीन हिन्दी कविता ने संवेदना के क्षेत्र मे जो सकात्मक भाव भंगीमा अपनामी है। वह मनुष्य को बिरिंनेसे भी बचान का ही प्रयास है नौर प्रकासन्तर से कविता की भावात्मक संवेदना एक मनुष्य के अंतर से आंतरिक रंगो से जोडने की सफल कोशिश है।

समकालीन हिन्दी कविता मे जन चेतना है कवि गजानन मुक्तिबोध कहैते है।

कविता मे कहने की आदत नही पर कह दूँ

वर्तमान समाज चल नही सकता

हिन्दी की समकालीन कविता मुक्ती बोध की ऋणी है। उन्होने भविष्य की कविता को पारिभाषित किया मुक्ती बोध की कविता अपने समय और भविष्य की कविता है समकालीन हिन्दी कविता जनजीवन की चेतना को चित्रित करने मे तथा जनचरित्रो की अनुभूती को व्यक्त करने में अपना स्थान जमा चुकी है। समकालीन कविने अपने लोकानुभव जन जीवन का तादात्मय कविता का पारंपारिक संबंध काव्य भाषा का ज्ञान लोकभाषा और लोक व्यवहार का ज्ञान प्रकृती दृष्टी मानवीय आकांक्षा इतिहास बोध सांस्कृतिक दृष्टी संपन्न संवेदना का भी विकास मिल जाता है। कविता जब समाज के विस्तार में आपने बीनसहित आकार ग्रहण करती है तब कविता जन चेतना की चरित्री बन जाती है। समकालीन कविता में जीवन गंधी परिदृश्य विपूल और पारदर्शी है। समकालीन हिन्दी कविता वर्तमान की विडंबनाओ और विकृतीयों की अभिव्यक्ती है. इसके मूल स्वर में हाशिएकृत मानव को केंन्द्र मे लाने की अकुलाहट है। वैश्विकस्तर पर व्याप्त रंगभेद नस्तभेद राष्ट्रीय परिप्रेख्य मे छूत

अछुत और जातिभेद के रूप मे देखा जा सकता है। दलित साहित्य मनुष्य होने की तमीज सिखाता है तथा जातिभेद पर अपना विमत व्यक्त करता है। घुणा को लेकर भाईचारे की स्थापना तथा समता की बयार प्रसारित करना इसका लक्ष्य है। दक्षिण अफ्रिका का रंगभेद अमेरिका का श्वेत अश्वेत विभत तथा जपान के बाराकुम समुदाय के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार को यहाँ की जातीय संकीर्णता के समतूल्य देखा जा सकता है। दलित समाज प्रतिभा और मेहन्नत के बूते उन्नती की और बढ रहा है। मानवीय रिश्तो की गरमाहट जमने लगी है तथा पूंजीवाद भोगोन्मूख विचारधारा एक उदारीकृत व्यवस्थाम आदमी फंसचूका है तथा ग्लोबला इजेशन के तमाम प्रकाश तले उसकी औखे फकी जा रही है । जिसमे कुछ तो वह पा लेना चाहता है और कुठ भी चमक उसका अंतर तक छील देना चाहती हो, तब समकालीन कविता एक नई आशा नई उमंग नई आस्था नई जिज्ञाषा तथा नए विश्वास के साथ पाठको को उदेलित करती है। समकालीन कविता जिंदगी की मनुष्य के भीतर बचे स्नेह सौहार्द तथा अपने पन को सहैजे लेने का प्रयास सिध्द करती है।

निष्कर्ष : समकालीन हिन्दी कविता की जो युवा कविता है वह दृष्टीकोण से महत्वपूर्ण और उल्लेखन्नीय है। इसमे आज की ज्वलंत समकालीन कविता से हटकर है जिसका प्रमुख कारण यह है कि वे निम्न मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि से आते है और इनकी पीडा आम जन मानस कवि है। कवि मानव की जासदी को बयान करने में भयाक्रांत नही है तथा कविताएँ मानो एक चूनौती को स्वीकार करती है। तथा क्रूर जीवन स्थितियों के बावजूद मानवीय आस्था को बरकरार करती है। शताब्दी के यथार्थ भयावहता अपनी जटील बुनावट मे भी आकार ग्रहण करती है। तथा मूठभेड का माद्या भी दर्शती है। कवि के पास दहकते शब्द है जिनमे एक और प्यार की उष्मा है तो दूसरी और आक्रमण की सामर्थ्य भी यह एक ह्रदयक वर्तमान से बेहद अक्रांत है। इतिलिए चीजों को बचाने उत्सुकता और जिद भी उसके देखी जा सकती है। आज का रचनाकार मनुष्य की जीवहता को सर्वाधिक महत्व देता है। उसके सामने एक सामने एक जिसे इन्सान का चेहरा होता है जो लाख परेशानियों मे भी जीने का रास्ता खोजता है। विपरीत परिस्थितीयों मे लडाता है। और विजय होने का सपना देखता है।

संदर्भ सूची

हिन्दी मे भूमण्डली करण का प्रभाव और प्रतिरोध सूरज पालीवाल शिल्पायान प्रकाशन दिल्ली.

समकालीन हिन्दी कविता विश्वनाथ प्रसाद तिवारी लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद
जादू नही कविता कात्ययनीवाणी प्रकाशन नई दिल्ली.
नयी कविता से विधा सिन्हा वाणी प्राकशन नई दिल्ली.
प्रतिनिध कविताए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना राज कमल प्रकाशन नई दिल्ली.
समकलीन और शाश्वतता रोहिताश्व विआ प्रकाशन नई दिल्ली
समकालीन कविता अज्ञेय और मुक्ती बोध डॉ. शशि शर्मा वाणी प्रकाशन नई दिल्ली.